6 SEP 2019

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

(प्राचीन इतिहास)

8 Test

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–H1

Name: Ravi Gangwar **Mobile Number:**

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** AWAKE-19/9002

Center & Date: Mukherjee Nagar/5/9/19 **UPSC Roll No. *(If allotted)*:** 0801337

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
*प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर **कोई अंक नहीं** मिलेंगे।*
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क / SECTION - A

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

1. आपको दिये गए मानचित्र (पृष्ठ नं. 5) पर अंकित निम्नलिखित स्थानों की पहचान कीजिये एवं अपनी प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में उनमें से प्रत्येक पर लगभग 30 शब्दों की संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये। मानचित्र पर अंकित प्रत्येक स्थान के लिये स्थान-निर्धारण संकेत क्रमानुसार दिये गए हैं: $2\frac{1}{2} \times 20 = 50$

Identify the following places marked on the map supplied to you and write a short note of about 30 words on each of them in your question-cum-answer booklet. Locational hints for the each of the places marked on the map are given below seriatim. $2\frac{1}{2} \times 20 = 50$

(i) एक महाजनपदकालीन स्थल अँग

A Mahajanapada site

(ii) एक राजधानी नगर वैराट

A capital city

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(iii) एक मौर्योत्तरकालीन स्थल प्रतिष्ठान / पैठन

A post-Mauryan site

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(iv) एक सैंधव स्थल मनसेहरा

An Indus site

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(v) एक ताम्रपाषाणकालीन स्थल

A Chalcolithic site

(vi) एक मध्यपाषाणकालीन स्थल

A Mesolithic site

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(vii) एक नवपाषाणकालीन स्थल

A Neolithic site

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(viii) एक बुद्धयुगीन प्राचीन स्थल मल्ल

An ancient Buddhist site

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ix) एक आरंभिक राजधानी नगर पाटलिपुत्र

An early capital city

(x) एक प्राचीन गणतंत्र लुम्बिनी

An ancient republic

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(xi) एक प्रसिद्ध बौद्ध स्थल सारनाथ

A famous Buddhist site

(xii) एक मौर्यकालीन स्थल वैशाली

A Mauryan site

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(xiii) एक प्राचीन शैव स्थल

An ancient Shaiva site

(xiv) एक राजधानी नगर

A capital city

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(xv) एक चोलकालीन अभिलेख स्थल · उत्तरमेरूर

A Chola period inscription site

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(xvi) एक संगमकालीन स्थल मदुरै

A Sangam period site

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(xvii) एक गुप्तकालीन मंदिर स्थल

A Gupta period temple site

(xviii) एक प्रसिद्ध गुफा स्थल अजन्ता

A famous cave site

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(xix) एक प्राचीन विश्वविद्यालय — विक्रमशिला

An ancient university

(xx) एक प्रसिद्ध सूर्य मंदिर — मोढेरा

A famous Sun temple

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (a) पुरातात्त्विक प्रमाण भारतीय इतिहास के ज्ञान के लिये अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं, जिनसे भारत के अंधकार युगों पर प्रकाश पड़ता है। विश्लेषण कीजिये। 20
Archaeological evidences are important source of knowledge of Indian history, as they help unravel the undocument periods. Analyse. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पुरातात्विक प्रमाण जैसे कि अभिलेख, मुद्रा, मृदभांड, मूर्ति, मुहर, आदि के द्वारा उस समय विशेष की विभिन्न धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्थितियों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

वस्तुतः पुरातात्विक सामग्री के द्वारा समय के उस कालखंड की सटीक जानकारी मिलती है जिसमें जाकर उसके बारे में जानना संभव नहीं होता है। इसे निम्न तरीके से वर्णित किया जा सकता है-

i) विभिन्न प्रकार के अभिलेख तथा पुरालेख द्वारा तत्कालीन समय के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

आसक की राजनीतिक। सामाजिक व्यवस्था का पता चलता है। साथ ही अभिलेख, स्तम्भलेख के निर्माण के क्रम में हुए वैज्ञानिक तथा शैल्पिक विकास का भी पता चलता है।

(i) इसी प्रकार मृदभाँडो की उपस्थिति कृषिगत उत्पादन तथा उसके भंडारण को सूचित करती है तथा विभिन्न प्रकार के मृदभांड समाज में वर्गीय विभाजन को भी सूचित करते है।

(iii) इसी प्रकार मुद्रा सम्बन्धी साक्ष्यों के द्वारा तत्कालीन शासक की धार्मिक रुचि का पता चलता है तो समाज के आर्थिक स्तर का भी पता चलता है। इसी क्रम में मुद्रा प्रसार के द्वारा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

साम्राज्य की क्षेत्रीय सीमा तथा व्यापार वाणिज्य के बारे में भी पता चलता है।

iv) इसी प्रकार अन्य विभिन्न मूर्तियाँ, चित्रों आदि द्वारा समाज के धार्मिक विश्वास का पता चलता है।

पुरातात्विक साक्ष्यों के महत्व का सबसे प्रमुख उदाहरण जेम्स प्रिंसेप द्वारा अशोक कालीन अभिलेखों का पढ़ा जाना माना जा सकता है। वस्तुतः इसके द्वारा भारत के प्राचीन काल में इतने महान राजा की उपस्थिति का पता चलता है। अन्यथा औपनिवेशिक कालीन यूरोपियन तो भारतीयों को शासन, प्रशासन तथा साम्राज्य निर्माण में निरा मूर्ख ही समझते थे।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) प्राचीन भारत के धार्मिक साहित्यों का मुख्य उद्देश्य जहाँ एक तरफ अपने धर्म के सिद्धांतों पर उपदेश देना था वहीं दूसरी तरफ धर्मेत्तर साहित्य प्राचीन काल की राजनीतिक गतिविधियों को विश्लेषित करते हैं। चर्चा कीजिये। 15

While religious literature of ancient India preached the religion principles the secular literature depicted the political activities of ancient times. Discuss. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्राचीन भारत के इतिहास के सन्दर्भ में साहित्यिक साक्ष्यों का अपना महत्व है। वस्तुतः विभिन्न धर्म के प्रचार प्रसार के क्रम में धार्मिक ग्रन्थ लिखे गये तो विभिन्न राज्यों की राजनीतिक गतिविधियों सम्बन्धी ग्रन्थ भी लिखे गये।

धार्मिक साहित्यों में बौद्ध धर्म से सम्बन्धित दिव्यावदान, बुद्धचरित आदि ग्रन्थ महत्वपूर्ण है तथा जैन ग्रन्थ से सम्बन्धित परिशिष्ट पर्व तथा आगम ग्रन्थ महत्वपूर्ण हैं। इन सब ग्रन्थों का मूल उद्देश्य अपने धर्म के प्रचार प्रसार पर ध्यान देना था तथा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अपने धर्म सम्बन्धी विभिन्न अभिप्रायों, दर्शनों के सम्बन्ध में जागरूकता फैलाना था।

इसी प्रकार धार्मिक साहित्य के इतर विभिन्न ग्रन्थ तत्कालीन राज्यों के प्रमुख शासकों के संरक्षण में लिखे गये जिसके चलते इनका प्रमुख विषय राजनीतिक व्यवस्था ही रही। जैसे कि मालविकाग्निमित्रम् में ● अग्निमित्र की रानी हो या फिर मुद्राराक्षस में मौर्यकालीन घटनाओं का वर्णन हो। इन सबका उद्देश्य तत्कालीन शासक वर्ग तथा उससे सम्बन्धित घटनाओं का वर्णन रहा है।

हालांकि अन्य पहलुओं के अन्तर्गत धार्मिक साहित्य में भी विभिन्न आर्थिक सामाजिक पक्षों का वर्णन मिल

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जाता है जैसे कि अंगुत्तर निकाय में 16 महाजनपदों का उल्लेख या फिर बौद्ध ग्रन्थों द्वारा 16 प्रकार के शिल्पों का उल्लेख हो या फिर अशोक के या मौर्यों के बारे में दिया गया वर्णन हो।

इसी प्रकार गैर-धार्मिक साहित्य भी केवल राजनीतिक गतिविधियों को ही संचित नहीं करते हैं। अपितु तत्कालीन समय के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक आयामों को भी प्रदर्शित करते हैं। जैसे कि अभिज्ञान शाकुन्तलम द्वारा समाज में प्रचलित विभिन्न विवाह पद्धतियों का पता चलता है तो अर्थशास्त्र द्वारा ~~विभिन्न~~ समाज में प्रचलित विभिन्न व्यापक तथा वैदिक नियमों का भी पता चलता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(c) मुद्राएँ तत्कालीन आर्थिक दशा तथा साम्राज्यों के सीमा निर्धारण में अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। टिप्पणी कीजिये। 15

Coins are important for determining the economic condition and frontier of empires. Comment. 15

प्राचीन इतिहास के पुनर्निर्माण में विभिन्न अभिलेखीय तथा साहित्यिक साक्ष्यों के साथ-साथ खनन में प्राप्त मृदभांड, मूर्तियाँ तथा मुद्राओं का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है।

मुद्राओं के द्वारा इतिहास निर्माण को निम्न बिंदुओं के तहत समझा जा सकता है:-

i) मुद्रा के निर्माण में प्रयुक्त धातु द्वारा तत्कालीन समाज की आर्थिक दशा का अनुमान लग जाता है। जैसे कि सोने की घटती मात्रा तथा मुद्रा हेतु कौड़ियों का प्रयोग घटते व्यापार-वाणिज्य तथा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निम्न आर्थिक स्थिति का द्योतक है।

ii) विभिन्न धातुओं से निर्मित मुद्राओं द्वारा राज्य की आर्थिक स्थिति का भी पता चलता है जैसे कि गुप्त काल या कुषाण काल के दौरान स्वर्ण मुद्राओं की अधिकता तत्कालीन आर्थिक समृद्धता को सूचित करती है।

iii) इसी प्रकार मुद्रा के ऊपर उल्लिखित शासक के नाम तथा काल से साम्राज्य की सीमा तथा कालक्रम का पता चलता है। वस्तुतः विभिन्न कालखंडों की मुद्राओं का समूहरूप मे जिस क्षेत्र का तर्क प्रसार होता था उसे साम्राज्य के अन्दर माना जाता था।

iv) इसी प्रकार व्यापार वाणिज्य द्वारा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विदेशी मुद्राओं की उपस्थिति की अधिकता समृद्धता को इंगित करती है।

(iv) मुद्रा द्वारा अन्य पक्षों के सन्दर्भ में यदि देखा जाये तो राज्य के धार्मिक, सांस्कृतिक विश्वास का पता चलता है। तो मुद्रा पर उत्कीर्ण विभिन्न कलाकृतियों या धार्मिक चिह्नों से तत्कालीन शासक के व्यक्तिगत धार्मिक विश्वास तथा रुचियों का पता चलता है।

(v) इसी प्रकार मुद्रा के प्रचलन द्वारा समाज में वस्तु विनिमय प्रणाली के स्थान पर मुद्रा विनिमय प्रणाली के प्रचलन का संकेत मिलता है। जो कि व्यापार-वाणिज्य तथा आर्थिक समृद्धता के उच्च स्तर को प्रकट करता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

खण्ड - ख / SECTION - B

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिये: $10 \times 5 = 50$

Answer the following in about 150 words each:

(a) प्राचीन काल में आमजन के बीच धर्मनिरपेक्ष ज्ञान प्रसारित करने में पुराणों के योगदान का मूल्यांकन कीजिये।

Evaluate the contribution of Puranas in spreading secular knowledge among the people in ancient times.

वैदिक काल के पश्चात भारतीय समाज में बढ़ी धर्म तथा कर्मकांडीय प्रवृत्ति से कुछ लोगों ने असहमति प्रकट करते हुए उपनिषदीय तथा पौराणिक चिन्तन को बढ़ावा दिया।

वस्तुतः पुराणों के जरिये समाज में पारलौकिक जीवन के प्रति समर्थन पैदा किया गया तथा विभिन्न बुराईयों के नाश हेतु ईश्वर के द्वारा अवतार लेने जैसी संकल्पना को प्रस्तुत किया गया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वस्तुतः पुराणों के जरिये लोगों में कर्मकाण्ड के बजाये भक्ति पर बल देने को कहा गया तथा अपने जीवन के दैनिक क्रिया-कलापों में सत्य, अहिंसा, परोपकार, दया आदि मूल्यों को समावेशित करने की बात की गयी। जिसके चलते न सिर्फ ब्राह्मण धर्म को लोकप्रियता मिली अपितु उसमें विद्यमान कर्मकाण्डीय व्यर्थ प्रवृत्ति को भी नियंत्रित किया जा सका।

इस प्रकार पुराण तथा उपनिषदों ने तत्कालीन समाज को इहलौकिक के साथ-साथ पारलौकिक चिन्तन से युक्त कर दिया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

स्थान में प्रश्न
अतिरिक्त कुछ

do not write
except the
number in
e)

(b) गुप्तकालीन विकेंद्रीकरण की प्रवृत्ति को भूमिदान प्रथा के संदर्भ में विश्लेषित कीजिये।

Analyze the trend of decentralization during Gupta Period in the context of Bhudana practice.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भूमिदान प्रथा की शुरुआत का अभिलेखीय साक्ष्य मौर्योत्तर कालीन सातवाहन शासकों के दौरान मिलता है।

प्रारम्भ में भूमिदान की शुरुआत धार्मिक उद्देश्यों के साथ हुयी थी किन्तु गुप्तकाल में इसे प्रशासनिक कारणों से भी दिया जाने लगा।

वस्तुतः गुप्तकाल में विभिन्न नौकरशाही के लोगों तथा अधिकारियों को वेतन के लिए भूमि दान की गयी तथा भूमि के सम्बन्ध में राजस्व व प्रशासन के अधिकार भी दिये गये। जिसमें राजा के सैनिक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रवेश नहीं कर सकते थे। इस प्रकार सम्बन्धित क्षेत्र पर राजा के बजाये सामन्त का प्रत्यक्ष शासन होता था।

इसी प्रकार समुद्रगुप्त द्वारा विभिन्न युद्धों में विजय के पश्चात उस राज्य की भूमि को पुनः सामंतो में बाँट देना भी इस विकेन्द्रीकरण को स्पष्ट करता है। चूँकि तत्कालीन समय में यातायात के साधनों के अभाव तथा प्रबन्धन की जटिलता के चलते भूमियान द्वारा राज्य का विकेन्द्रीकरण प्रशासन की कार्यकुशलता तथा दक्षता को बढ़ाये। जाने का प्रयास किया जाता था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

Please do not write anything except the question number in this space)

(c) छठीं शताब्दी ई.पू. से चौथी शताब्दी ई.पू. तक सामाजिक व्यवस्था, विशेषकर स्त्रियों की दशा में आए परिवर्तनों को उल्लेखित करें।

Illustrate the changes in the social system, especially in the condition of women, during the 6thC BC to 4th C BC.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

देढी शताब्दी ई० पू० में महाजनपद काल के दौरान लोहे की खोज तथा उसके इस्तेमाल ने विभिन्न राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक परिवर्तनों चक्र को शुरू किया। जिसमें बौद्ध धर्म, जैन धर्म जैसे सामाजिक आन्दोलन प्रमुख थे।

वस्तुतः इन आन्दोलनों ने समाज में व्याप्त कुप्रथाओं का विरोध किया गया महिलाओं की स्थिति सुधारने का भी प्रयास किया।

इसी क्रम में बौद्ध धर्म में भी प्रवेश की इजाजत मिली तथा जैन धर्म में भी संघो का निर्माण हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन सब प्रयासों के चलते समाज में जातिप्रथा, अस्पृश्यता के प्रसार में कमी आयी तथा महिलाओं की सामाजिक स्थिति में भी सुधार हुआ। फलतः अब उनको भी मोक्ष तथा शिक्षा का अधिकारी माना जाने लगा (बौद्ध धर्म) तथा इसी प्रकार उनकी सैनिक तथा राज-नीतिक भूमिका में भी वृद्धि हुयी। जैसे कि अशोक द्वारा अपने अंग-रक्षकों में महिलाओं को शामिल किया जाना तथा स्त्री कल्याण हेतु इतिझिक महामात्र नामक अधिकारी की नियुक्ति किया जाना है। इन सब उदाहरणों द्वारा स्त्री की स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन का संकेत मिलता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) हर्षवर्धन की महानता राजनीतिक-प्रशासनिक क्षेत्र में उसके उच्च आदर्शों के अंतर्गत दिखाई देती है। व्याख्या कीजिये।
The greatness of Harshavardhana evident in his high ideals in politico-administrative arena. Explain.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हर्षवर्धन का उदय गुप्तोत्तर काल में हुआ। जिसमें उसने विभिन्न क्षेत्रीय शक्तियों को पराजित कर सकलोत्तर पथ पथेश्वर की उपाधि भी अर्जित की।

वस्तुतः उसकी विभिन्न सैनिक विजयों के क्रम में उसकी तुलना समुद्रगुप्त से तथा बौद्ध धर्म विषयक सोच व प्रजा हितैषी कार्यों के चलते उसकी तुलना अशोक से की जाती है।

वस्तुतः हर्षवर्धन द्वारा राज्य की आय को चार भागों में बाँटकर, एक भाग का व्यय प्रजा हित में किया जाता था जो उसके प्रजा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदवी होर को प्रभावित करता है।

इसी प्रकार तत्कालीन समय की विभिन्न क्षेत्रीय शक्तियों, जैसे असम के शासक से मैत्री सम्बन्ध हो या वल्लभी के शासक के साथ वैवाहिक सम्बन्ध हो, से समन्वय कायम कर अपनी राजनीतिक प्रमुखता की स्थापना भी हर्षवर्द्धन ने की।

इसी क्रम में गुप्तोत्तर काल में सामंतवाद का विकास हो चुका था जिसके चलते विभिन्न सामंतों पर नियंत्रण रखते हुए अपने राज्य की एकता तथा समृद्धता बनाये रखना भी हर्ष की प्रशासनिक तथा राजनीतिक कुशलता का प्रभाव है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(e) संगमकालीन दक्षिण भारत में वैदिक संस्कृति के स्वरूप पर चर्चा कीजिये।
Discuss the nature of Vedic culture in South India during the sangam age.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संगमकालीन दक्षिण भारत में चोल चेर, पांड्य राज्य विद्यमान थे। वस्तुतः इस काल में तीन संगम बैठकें हुयी। जिनमें संकलित ग्रन्थों से प्राप्त संगम युग का इतिहास पता चलता है।

वस्तुतः संगम युग में समाज ब्राह्मण तथा गैर ब्राह्मण में वर्गीकृत था जो कि वैदिक संस्कृति से थोड़ा भिन्न दिखायी पड़ता है। इसी प्रकार संगमकालीन समाज में कण्णगी पूजा का प्रचलन होना, समाज में महिलाओं की उचित स्थिति का वर्णन करता है। जो कि ऋग्वैदिक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कालीन समाज की भी विशेषता है।
संगम काल में समाज पारलौकिक प्रवृत्ति से ज्यादा प्रकट था जैसे कि महापाषाणों कब्रों में दैनिक जीवन की वस्तुएँ पायी जाना। जबकि वैदिक लोग इहलौकिक ज्यादा थे।
इसी प्रकार संगम काल में विभिन्न वैदिक प्रथाये अपने विकसित स्वरूप में आ चुकी थी। जैसे कि पशुपालन के बजाये कृषि मुख्य पेशा बनना तथा शिव के स्वरूप की महत्वा बढ़ना तथा इंद्र की महत्वा कम होना। साथ ही संगम काल में जैन व बौद्ध धर्म के प्रभाव को भी देखा जा सकता है जो कि वैदिक कालीन विशेषता नहीं है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (a) "बौद्ध संघ एक संगठित एवं शक्तिशाली संस्था थी जिसे आधुनिक लोकतंत्र के विकास की प्रारंभिक अवस्था भी कहा जा सकता है।" टिप्पणी करें। 15
"The Buddhist Sangha was an organized and powerful institution, which can be regarded as the early stage of development of modern democracy." Comment. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महाजनपद काल के दौरान लोहे के बढ़ते इस्तेमाल से विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक परिवर्तनों का जन्म हुआ। जिसमें समाज-सुधार हेतु बौद्ध धर्म का उदय भी महत्व-पूर्ण है।

वस्तुतः बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु बौद्ध संघ का निर्माण किया गया जो कि अपनी प्रकृति में काफी हद तक तौकतांत्रिक थे। बौद्ध संघ के अपने कुछ नियम तथा कानून थे, जिनका पालन सभी को करना था इसमें कोई

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भी व्यक्ति विशिष्ट नहीं होता था। इसी प्रकार विभिन्न भिक्षुओं के संघ निकासी के मुद्दे पर ~~xxxx~~ सार्वजनिक रूप से एक सभा द्वारा निर्णय लिया जाता था तो विभिन्न क्रिया-कलाप तथा नियमों के निर्माण हेतु भी एक परिषद का निर्माण किया जाता था। जो कि आधुनिक कालीन संसद के समान होती थी।

वस्तुतः बौद्ध संघ में समाज के हर वर्ग तथा जाति के व्यक्ति को प्रवेश मिलता था, जिसमें महिलाएँ भी शामिल थी जो कि बौद्ध संघ के लोकतांत्रिक तथा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

समावेशी स्वरूप को पुष्टि करता है। हालांकि बौद्ध संघ में प्रवेश व्यक्ति तथा चोर को प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी तो साथ ही महिलाओं के प्रवेश हेतु उनके पति या चिता की अनुमति की आवश्यकता होती थी। जो कि इस बौद्ध संघ के लोकतांत्रिक स्वरूप की सीमाएँ थी हैं।

निष्कर्षतः तत्कालीन समय के हिसाब से बौद्ध संघ लोकतांत्रिक प्रकृति से युक्त था और स्त्री वजह से न केवल इसका भारत में अपितु विदेशों में भी अत्यधिक प्रचार-प्रसार हुआ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) यद्यपि मौर्योत्तर काल में उत्तर में कुषाण तथा दक्षिण में सातवाहनों ने एक बड़े क्षेत्र पर शासन किया तथापि वे मौर्यों की भाँति एक सुदृढ़ केंद्रीयकृत प्रशासनिक व्यवस्था का निर्माण न कर सके। चर्चा कीजिये। 20

Although, Kushanas in the north and Satavahanas in the south ruled over a large area in the Post-Mauryan period, they could not build a strong centralized administrative system like the Mauryas. Discuss. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मौर्य काल में अशोक के साम्राज्य के पतन के बाद सम्पूर्ण भारत विभिन्न छोटी-छोटी राजनीतिक इकाई यों में बँट गया। जिनमें शुंग वंश, कण्व वंश, कुषाण वंश, सातवाहन वंश प्रमुख थे।

उत्तर में कुषाणों द्वारा अफगानिस्तान से लेकर मथुरा तक के राज्यक्षेत्र पर शासन किया गया तो दक्षिण में सातवाहन शासकों द्वारा लगभग सम्पूर्ण पठारी क्षेत्र पर शासन किया गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कुषाण तथा सातवाहनों द्वारा इतने बड़े साम्राज्य पर शासन के करने के बावजूद भी भारत में एक सुदृढ प्रशासनिक व्यवस्था कायम नहीं हो सकी। क्योंकि :-

i) उपर्युक्त दोनों साम्राज्य आपस में भिन्न धार्मिक तथा सामाजिक व्यवस्था से थे। वस्तुतः कुषाण विदेशी थे तो सातवाहन शासक ब्राह्मण थे।

ii) इसी प्रकार इन साम्राज्यों को क्षेत्रीय शक्तियों यथा वाकाटक, शक, नागवंश आदि से चुनौती मिलती रही। फलस्वरूप ये एक सुदृढ तथा केंद्रीकृत प्रशासनिक व्यवस्था का निर्माण नहीं कर सके।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

iii) विभिन्न क्षेत्रीय ~~राज~~ राजनीतिक संघर्षों में व्यस्त रहने के चलते इस काल के सम्बन्ध में कोई विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं हो पायी जैसे कि अभिलेख, स्तम्भलेख आदि। फलतः इस काल को कुछ लोग अंधकार युग भी कहते हैं।

हालांकि अपनी तमाम सीमाओं के बावजूद मौर्योत्तर काल में एक विकसित आर्थिक तथा व्यापारिक व्यवस्था का विकास हुआ। जिसे इस दौरान रेशम मार्ग की महत्ता तथा प्रचलित सोने व चाँदी के सिक्कों के द्वारा ~~अ~~ सरलता से प्रमाणित किया जा सकता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) "मौर्योत्तरकालीन मौद्रिक अर्थव्यवस्था इसके पूर्व की मुद्रा प्रणालियों का ही विकसित रूप थी।" टीका कीजिये। 15

"The Post-Mauryan monetary economy was a developed form of its earlier currency systems." Comment. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मौर्योत्तर काल में हुए आर्थिक, व्यापारिक विकास ने समाज तथा अर्थव्यवस्था के क्रम में वस्तु-विनिमय प्रणाली के स्थान पर मुद्रा विनिमय अर्थव्यवस्था का विकास किया। फलस्वरूप सोने, चाँदी, सीसे आदि की मुद्राओं का प्रचलन हुआ।

वस्तुतः मौर्योत्तर काल से पूर्व - सम्पूर्ण भारत पर मौर्यों का राज्य था। जिनके द्वारा किये गये विभिन्न निर्माण कार्य जैसे कि - व्यापारिक मार्गों का निर्माण, विभिन्न उत्पादन केन्द्रों की स्थापना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आदि द्वारा ~~के~~ व्यापार तथा वाणिज्य को प्रोत्साहन दिया गया। हालांकि अभी भी मौर्यकाल में स्वर्ण तथा चाँदी की मुद्रायें प्रचलित थी किन्तु इनका उपयोग विनिमय हेतु नहीं किया जाता था।

इसी प्रकार मौर्यकाल से पहले सिंधु सभ्यता से लेकर वैदिक काल तथा महाजनपद काल तक मुद्राओं की उपस्थिति किसी न किसी रूप में बनी रही है। फिर चाहे वह आहत सिक्के हों या फिर केवल पहचान सिद्ध करने हेतु मुद्रा छाप का प्रयोग करना। आदि कई रूपों में मुद्रा का प्रयोग होता आया था।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किन्तु जब मौर्योत्तर काल में कृषि, शिल्प, व्यापार, वाणिज्य के विकास ने समाज में सोने, चाँदी आदि की अत्यधिक मांग उत्पन्न की (जिसमें रोम तथा चीन से व्यापार का महत्त्वपूर्ण योगदान था) तो समाज में मुद्रा अर्थव्यवस्था का विकास हुआ। और जब-जब इस आर्थिक संवृद्धि तथा विकास कम हुआ मुद्रा अर्थव्यवस्था की जगह वस्तु विनिमय पुनः प्रचलन में आया जैसे कि सामंतवाद काल।

इस प्रकार मुद्रा अर्थव्यवस्था का विकास एक लम्बी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक प्रक्रिया का परिणाम था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (a) प्राचीन भारत के कुछ शिक्षण संस्थान अपने दुखद अंत के बावजूद भारतीय संस्कृति और विरासत को सुरक्षित एवं समृद्धशाली बनाने में सहायक सिद्ध हुए। विवेचना कीजिये। 15

Some educational institutions of ancient India, despite their tragic end, proved to be helpful in making Indian culture and heritage safe and prosperous Discuss. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

8. (a) ह्वेनसांग तथा फाह्यान के यात्रा विवरण सिर्फ धार्मिक स्थिति की जानकारी तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि तत्कालीन भारत की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक दशाओं पर भी प्रकाश डालते हैं। स्पष्ट कीजिये। 15

The travelogues of Hiuen-Tsang and Fa-Hien are not limited to information on religious status but also highlight the political, social and economic conditions of India. Elucidate. 15

गुप्तकाल तथा गुप्तोत्तर कालीन भारतीय इतिहास की जानकारी हेतु ह्वेनसांग तथा फाह्यान के यात्रा विवरण बहुत ही ज्यादा महत्वपूर्ण है। जिनमें तत्कालीन भारत की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक दशा का वर्णन किया गया है।

वस्तुतः ह्वेनसांग तथा फाह्यान दोनों ही बौद्ध धर्म के अनुयायी थे तथा दोनों का उद्देश्य बौद्ध धर्म के सम्बन्ध में अधिक जानकारी अर्जित करना था और इसलिए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ही उन्होंने भारत की यात्रा की तथा अपने प्रवास के दौरान विभिन्न बौद्ध स्थलों का भ्रमण भी किया।

किन्तु जब उन्होंने अपना यात्रा वृत्तान्त लिखा तो उन्होंने अपने प्रवास के दौरान के भारत की धार्मिक स्थिति के साथ-साथ आर्थिक, सामाजिक स्थिति का भी वर्णन किया। जैसे कि फाह्यान द्वारा पाटलिपुत्र नगर का वर्णन तथा गुप्त समाज में प्रचलित न्याय प्रणाली में दिव्य परीक्षा का होना तथा राजा का प्रजा हितैषी होना तथा समाज में चांडालों की उपस्थिति आदि वर्णन फाह्यान ने किये हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी प्रकार ह्वेनसांग द्वारा यह बताना कि गुप्तोत्तर काल में राजा प्रयाग काशी में महामोक्षपरिषद् आयोजित की जाती थी तथा हर्ष एवं चालुक्य शासक पुलिकेशन-2 के मध्य युद्ध का वर्णन करना तथा वल्लभी स्थित शैक्षिक केन्द्र की प्रशंसा करना। इसी प्रकार ह्वेनसांग भारतीयों के बारे में बताते हुए वर्ण व्यवस्था के प्रचलन तथा कठोरता के बारे में भी बताता है।

उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि इन चीनी यात्रियों का लेखन धार्मिक के साथ-2 आर्थिक राजनीतिक, सामाजिक आयामों से युक्त है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) सातवीं सदी के आरंभ से ही कन्नौज भारत की राजनीति का केंद्रबिंदु बन गया जिसने त्रिपक्षीय संघर्ष की स्थिति पैदा की। कथन के संदर्भ में त्रिपक्षीय संघर्ष के कारणों तथा प्रभाव को बताएँ। 20

Kannauj became the focal point of Indian politics since the beginning of the seventh century which created the situation of tripartite struggle. In the context of the statement, discuss the causes and effect of the tripartite struggle. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गुप्तोत्तर काल में हर्ष द्वारा कन्नौज को अपनी राजधानी बनाये जाने से कन्नौज के राजनीतिक तथा आर्थिक उत्थान की प्रक्रिया प्रारम्भ हुयी थी।

गुप्तोत्तर काल के पश्चात बंगाल के पाल वंश तथा पश्चिमी भारत के प्रतिहार वंश के मध्य कन्नौज के ऊपर अधिकार को लेकर संघर्ष शुरू हुआ। जिसमें राष्ट्रकूट शासकों ने भी हस्तक्षेप किया। जिससे चलते यह त्रिपक्षीय संघर्ष बन गया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कारण 5- i) त्रिपक्षीय संघर्ष का प्रमुख कारण कन्नौज के ऊपर अधिकार करना था। वस्तुतः उस समय कन्नौज आर्थिक तथा राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण शहर था।

ii) प्रतिहार शासकों के लिए विस्तार के हेतु पूर्वी भारत तो वाल शासकों के विस्तार के लिए पश्चिमी भारत ही उपलब्ध था। फलस्वरूप दोनों में संघर्ष शुरू हुआ। जिसमें दक्षिण भारत के राष्ट्रकूट शासक भी बाद में शामिल हुए।

iii) तीनों शासक साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा से युक्त थे जिसका परिणाम आपसी संघर्ष के रूप में सामने आया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रभाव :- i) त्रिपक्षीय संघर्ष के चलते ये क्षेत्रीय शक्तियाँ आपस में ही लड़ती रहीं। फलस्वरूप इनकी शक्ति तथा सामर्थ्य कमजोर हुआ।

ii) आपसी संघर्ष के चलते तीनों साम्राज्य बर्बाद हो गये और गजनवी के आक्रमण का प्रतिरोध न कर सके।

iii) आपसी संघर्ष तथा महत्वाकांक्षा के चलते इन राज्यों में कभी राजनीतिक एकता का सूत्रपात नहीं हुआ। फलतः महमूद गजनवी ने इन राज्यों को सरलता से पराजित किया और भारतीय धन-सम्पदा को लूट-कर ले गया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) शताब्दियों तक स्त्रियों की दयनीय सामाजिक स्थिति के लिये ज़िम्मेदार अधिकांश रूढ़िगत प्रथाएँ गुप्त काल में विकसित हुई दिखाई देती हैं। विश्लेषण कीजिये। 15

The centuries old conservative practices responsible for the miserable social status of women appear to have evolved in the Guptas period. Analyze. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्त्रियों की दयनीय सामाजिक स्थिति की जिम्मेदार प्रमुख रूढ़िगत प्रथायें जैसे कि बाल विवाह, सतीप्रथा, पर्दा प्रथा, विधवा प्रथा, बहु विवाह, देवदासी प्रथा आदि को माना जा सकता है।

वस्तुतः गुप्तकाल के दौरान इन सामाजिक प्रथाओं के विकसित होने को निम्न बिंदुओं के तहत समझा जा सकता है:-

i) भूमिदान के चलते सामन्तीकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा मिला। फलस्वरूप सामन्तों ने श्रेष्ठ पर नियन्त्रण हेतु

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बल प्रयोग का सहारा लिया तथा शोषण की प्रवृत्ति का विकास हुआ। फलस्वरूप आम जन ने कठिनाईयों से बचने हेतु बालविवाह जैसी प्रथाओं से शुरू किया।

ii) इसी प्रकार मंदिर निर्माण की शुरुआत होने से देवदासी प्रथा को बढ़ावा मिला

iii) इसी प्रकार विभिन्न विदेशी जातियों के आक्रमण के चलते पर्दा प्रथा को बढ़ावा मिला।

iv) युद्ध तथा संघर्ष के चलते लड़कियाँ विधवा हुयीं तथा उनकी जिम्मेदारी से बचने हेतु, सती प्रथा की शुरुआत हुयी एवं इसकी सामाजिक स्वीकारोक्ति हेतु इसे स्त्री सम्मान तथा गरिमा से जोड़ दिया गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किन्तु कुछ प्रथायें जैसे कि स्त्री को राजनीतिक सहभागिता में शामिल न करना, स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहित न करना, स्त्री को केवल उपभोग की वस्तु मानना तथा दहेज प्रथा, आदि की शुरुआत तो लगभग उत्तर वैदिक काल से हो चुकी थी। जिनका विकसित स्वरूप आज भी भारत में विद्यमान है।

इस प्रकार स्त्री की दयनीय दशा का जिम्मेदार किसी एक काल विशेष को नहीं माना जा सकता। बल्कि यह तो सदियों की सामाजिक संरचना का परिणाम है।

Feedback

Questions ....

Model Answer & Answer Structure ....

Evaluation ....

Staff ....

Copyright – Drishti The Vision Foundation